02 दिसम्बर 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य :2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:30 से 7:00 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 45, अंक : 17
दिसम्बर (प्रथम), 2022 (वीर नि. संवत्-2549)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के...

सहजता दिवस पर विशेष समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 21 नवम्बर 2022 को अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के 90वें जन्म दिवस के अवसर पर उनके उपकारों का स्मरण करते हुए सहजता दिवस के रूप में एक समारोह का भव्य आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. कृष्णगोपालजी कुमावत एवं विशिष्ट अतिथियों में श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री गोपालजी प्रभाकर, श्री ताराचन्दजी सोगानी, पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा,श्री अनुभवप्रकाशजी भारिल्ल, श्री हीराचन्दजी बैद, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल, डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया आदि मंचासीन थे। सहजता दिवस का परिचय पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने दिया। संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं मंगलाचरण सहज जैन छिंदवाड़ा ने किया।

विशेष वक्तव्य डॉ. कृष्णगोपालजी कुमावत (अमर जैन हॉस्पिटल), श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री मिलापचन्दजी डंडिया, डॉ. अखिलजी बंसल, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन एवं पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी ने अपने उद्बोधन में बड़े दादा का स्मरण कर अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। अन्त में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का अध्यक्षीय उद्बोधन प्राप्त हुआ।

छात्र वक्तव्यों में अविरल जैन, खनियांधाना तथा चेतन जैन, गुढ़ाचन्द्रजी ने वक्तव्य एवं कपिल जैन बम्होरी ने कविता से अपनी भावनाएँ व्यक्त की। साथ ही **सहज पुरूष की सहज जीवन यात्रा** नामक 20 मिनिट की वीडियो प्रस्तुत की गई।

समाधि मरण नहीं; जीवन है।

09 से 13 नवम्बर 2022 तक 'समाधि का सार' विषय पर विद्वत् संगोष्ठी का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने मंगल उद्बोधन देते हुए कहा कि समाधि मरण नहीं है; क्योंकि मरण तो एक समय का होता है। हमें तो अपने जीवन को समाधिमय बनाना है। फिर हमारा मरण स्वयं ही समाधि मरण कहलायेगा। समाधि के लिए किसी के पास जाने की जरूरत नहीं है, जिसे समाधि लेना हो वह अपने जीवन को सरल व सहज बनाये।

यह संगोष्ठी डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन में पण्डित अरूणजी मोदी सागर के सौजन्य से सम्पन्न हुई, जिसमें प्रत्येक सत्र में विविध विद्वानों ने समाधि के सम्बन्ध में अपने शोध व चिन्तनपूर्ण विचार व्यक्त किए।

महाविद्यालय की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के अन्तर्गत...

साप्ताहिक विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों के अन्तर्गत तात्त्विक विचार गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 20 नवम्बर 2022 को **जैन दर्शन में प्रमाण मीमांसा** विषय पर परीक्षामुख ग्रन्थ पर आधारित गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया ने की।

श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में उपाध्याय वर्ग से श्रवण उपाध्ये शिरहटी एवं शास्त्री वर्ग से पुष्प जैन आगरा चुने गए। सत्र का संचालन श्रीवर्द्धन पाटील कुम्भोज-बाहुबली तथा विराग बैलोकर डासाला एवं मंगलाचरण अक्षत जैन खनियांधाना ने किया। आभार-प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

48 सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

आठवें अध्याय का सार (उपदेश का स्वरूप)

प्रथमानुयोग के व्याख्यान का विधान...

प्रथमानुयोग में मूल कहानी तो ज्यों की त्यों होती है; लेकिन जो व्याख्यान होता है, वह ग्रन्थकर्ता का अपना होता है; परन्तु प्रयोजन अन्यथा नहीं होता। जैसे पंचकल्याणक में सौधर्मेन्द्र ने तीर्थंकर की स्तुति की। वहाँ उन्होंने अलग तरह से स्तुति की और यहाँ अलग तरह से लिखी; लेकिन स्तुतिरूप प्रयोजन नहीं बदलता।

कई स्थानों पर काल्पनिक कथाएँ भी लिखी जाती हैं। जैसे धर्मपरीक्षा में मूर्खों की कहानियाँ लिखीं, पर वे झूठी नहीं हैं; क्योंकि प्रयोजन अन्यथा हो तो झूठ होता है।

वहाँ जिसकी मुख्यता हो उसी का पोषण किया जाता है। जैसे णमोकार मंत्र सुनने से कुत्ता मरकर स्वर्ग गया। वहाँ स्वर्ग तो णमोकार मंत्र के निमित्त से जो परिणाम सुधरे उससे गया; परन्तु निरूपण णमोकार मंत्र की मुख्यता से किया। यहाँ कोई कहे कि झूठा फल बताना तो योग्य नहीं है? उससे कहते हैं कि धर्म के फल को पाप और पाप के फल को धर्म बतायें तो झूठा हो। दस लोगों ने कोई काम किया और सम्मान एक का किया जाए अथवा दान पिता ने दिया हो और पुत्र को दानवीर कहा जाये – इसमें तो कोई दोष नहीं है।

प्रथमानुयोग में उपचाररूप कथन भी बहुत होते हैं। जैसे किसी ने एक विषय में शंका न की हो उसे सम्यग्दृष्टि कह देते हैं। जैन शास्त्रों के किसी एक अंग का ज्ञान होने पर सम्यग्ज्ञानी कह देते हैं। किसी छोटी–मोटी प्रतिज्ञा का अति दृढ़ता से पालन किया हो तो चारित्रवान कह देते हैं।

कहीं–कहीं धर्म बुद्धि से अनुचित कार्य करने वाले की भी प्रशंसा करते है। जैसे विष्णुकुमार मुनि ने छल किया, ऊँचा धर्म छोड़कर नीचा धर्म अंगीकार करना तो योग्य नहीं है; लेकिन धर्म बुद्धि होने से उनके वात्सल्य भाव की प्रशंसा करते हैं।

कभी–कभी पुत्रादि की प्राप्ति व कष्ट–रोग दूर करने के अर्थ धर्म कार्य करने वाले की भी प्रशंसा करते हैं। यहाँ निकांक्षित अंग का अभाव व आर्त्तध्यान होने से पाप ही हुआ; परन्तु उसने कुदेवादि का सेवन नहीं किया; इसलिए उसकी प्रशंसा करते है।

इसप्रकार प्रथमानुयोग का व्याख्यान विधान जानना।

करणानुयोग के व्याख्यान का विधान...

करणानुयोग में केवलज्ञानगम्य जीव–कर्मादि, त्रिलोकादि का निरूपण होता है; परन्तु सभी बातों का सूक्ष्म वर्णन नहीं होता। जिसप्रकार वचनगोचर होकर छद्मस्थ के ज्ञान में भावभासन हो सके उसप्रकार संकुचित वर्णन करते हैं। भाव तो अनन्त प्रकार के होते है; लेकिन उनकी एक जाति पकड़कर भाव अपेक्षा चौदह गुणस्थान बतला देते हैं। जैसे कर्मों की 148 प्रकृतियाँ कहीं, जबकि कर्म तो असंख्यात होते हैं। जैसे किसी ने जयपुर की प्रंशसा सुनी कि वहाँ हवामहल, जलमहल, आमेर का किला, अल्बर्ट हॉल, टोडरमल स्मारक है। अब वह इन सभी स्थानों को एक कागज़ पर बना ले तो वह जयपुर तो नहीं हो सकता। वैसे ही करणानुयोग में समझने–समझाने की दृष्टि से वर्णन किया जाता है।

यद्यपि वस्तु द्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव की अपेक्षा से अभेद, अखण्ड है; परन्तु प्रयोजन की अपेक्षा प्रदेश, समय, अविभागी प्रतिच्छेद रूप अंश करके समझाते हैं। करणानुयोग में जो कथन प्रत्यक्ष अनुमानगोचर हों, उन्हें तो वैसे ही स्वीकार करना और जो बुद्धिगोचर न हों, उन्हें आज्ञा से स्वीकार करना।

करणानुयोग में किसी व्यक्ति की कषाय की प्रवृत्ति बहुत हो और कषाय–शक्ति कम हो, उसे मन्दकषायी कह देते हैं। तथा किसी के कषाय की प्रवृत्ति थोड़ी होने पर भी तीव्रकषायी कह देते हैं। जैसे व्यंतरादि कषाय से नगर को जला देते हैं, फिर भी उन्हें पीत लेश्या (मन्दकषाय) वाला कहा। एकेन्द्रिय जीव के कषाय की प्रवृत्ति तो दिखती नहीं है, फिर भी उन्हें कृष्ण लेश्या (तीव्रकषाय) वाला कहा।

किसी के मन–वचन–काय की चेष्टा थोड़ी हो और योग बहुत होता है तथा किसी के चेष्टा बहुत हो और योग थोड़ा होता है। जैसे केवली के चेष्टा कम है और योग बहुत कह दिया।

तथा जिसका सद्भाव दिखाई नहीं देता उसका अस्तित्व कहते हैं। जैसे मुनिराजों के अब्रह्म तो है नहीं; लेकिन 9वें गुणस्थान तक मैथुन संज्ञा कही।

कोई जीव एक अन्तर्मुहूर्त में ही ग्यारहवें गुणस्थान तक चला गया फिर पहले मिथ्यात्व में आ गया और फिर ऊपर चढ़कर केवलज्ञान प्रकट कर लिया – ऐसे अनेक सूक्ष्म कथन होते हैं। तथा अनेक स्थूल कथन भी होते हैं। जैसे व्यास से तीन गुनी परिधि कही जाती है; लेकिन वास्तव में तो तीनगुनी से अधिक होती है। ऐसे ही और भी नानाप्रकार के कथन पाये जाते हैं, उन्हें यथासम्भव जानना

इसप्रकार करणानुयोग के व्याख्यान का विधान बतलाया।

चरणानुयोग के व्याख्यान का विधान...

चरणानुयोग में जीवों को बुद्धिगोचर हो सके वैसे धर्म का उपदेश देते हैं। यहाँ व्यवहारनय की प्रधानता से धर्म विरूद्ध कार्य को छुड़ाकर धर्म में लगाते हैं। जिन मिथ्यादृष्टि जीवों को निश्चय का ज्ञान नहीं है, उन्हें केवल व्यवहार ही का उपदेश देते हैं और जिन जीवों को निश्चय-व्यवहार का कुछ ज्ञान है, उन्हें निश्चय सहित व्यवहार का उपदेश देते हैं। इसप्रकार जिनवाणी में सभी जीवों पर उपकार किया। यहाँ कोई कहे कि असंज्ञी जीवों पर किसप्रकार उपकार किया? उससे कहते हैं कि अन्य जीवों को उनके प्रति करुणाभाव रखने का उपदेश दिया; यही उन पर उपकार है।

जिन्हें कर्म की तीव्रता के कारण निश्चय मोक्षमार्ग नहीं हो सकता, उन्हें व्यवहारधर्म का उपदेश देकर पाप से छोड़कर पुण्य में लगाया। दिन-रात पाप क्रियाओं में लगे जीवों को कुगति से बचाने के अर्थ नित्य देव-दर्शन व पूजनादि का उपदेश दिया। तथा निश्चय सहित व्यवहार के उपदेश में परिणामों के सुधारने की प्रधानता रखी; क्योंकि परिणाम सुधरने पर क्रिया सुधरती ही है।

हे भव्य जीवों! अपने परिणाम सुधारने का विचार करना; क्योंकि फल तो परिणामों का ही लगता है।

चरणानुयोग में छोटी-सी प्रतिज्ञा का पालन करने वाले को भी धर्मात्मा कहते हैं। जैसे कौए का माँस छोड़ने मात्र से धर्मात्मा कहा। यदि कोई नित्य देवदर्शन करता हो तो धर्मात्मा है। चरणानुयोग की दृष्टि से तो हम सभी योग्य आचरण वाले जीव सम्यग्दृष्टि हैं।

चारों ही अनुयोग भिन्न-भिन्न पद्धति से निरूपण करते हैं। प्रथमानुयोग में देव-शास्त्र-गुरु के श्रद्धानी को सम्यग्दृष्टि कहते हैं, चरणानुयोग में अन्याय-अनीति-अभक्ष्य के त्यागी को, करणानुयोग में चौथे से ऊपर के गुणस्थान वालों को एवं द्रव्यानुयोग में तत्त्वों के श्रद्धानी को सम्यग्दृष्टि कहते हैं।

यहाँ तीव्र कषाय के कार्य छुड़ाकर मन्द कषाय के कार्यों का उपदेश देते हैं। यद्यपि कषाय तो तीव्र हो या मन्द बुरी ही है; तथापि यदि सर्व कषाय न छूटे तो जितनी छूट सके उतना तो भला ही है। जैसे कोई व्यक्ति मकान बनवा रहा हो, उसे वह कार्य छुड़ाकर मंदिर बनवाने में धर्म बतलाते हैं। कोई फिल्मी गाने गाता था, उसे भजन /भक्ति/स्तुति गाने में धर्म बतलाते हैं। कोई व्यर्थ ही धन खर्च करता था, उसे दान करने में धर्म बतलाकर धर्ममार्ग में लगाते हैं।

इसप्रकार चरणानुयोग के व्याख्यान विधान का कुछ वर्णन यहाँ किया। अन्य अनेक बातें आगे कहेंगे। **(क्रमशः)**

महाविद्यालय का सुयश

जयपुर (राज.) : यहाँ जयपुर के मशहूर जवाहर कला केन्द्र (JKK) में 14 नवम्बर 2022 को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष (ज्ञाता कक्षा) के छात्रों ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। जवाहर कला केन्द्र में बाल दिवस के अवसर पर नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें विद्यार्थियों ने जैनधर्म के नैतिक सिद्धान्त **पांच पाप** विषय पर विशाल जन समुदाय के समक्ष उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण किया।

ज्ञातव्य है कि ये विद्यार्थी इससे पूर्व 4 स्थानों पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर उत्कृष्ट स्थान प्राप्त कर चुके हैं; एतदर्थ सभी प्रतिभागियों को जैन पथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

सोनगढ़ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह के तत्त्वावधान में दिनांक 10 से 13 नवम्बर 2022 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर लघु पंचपरमेष्ठी विधान, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के पुरूषार्थसिद्धि उपाय पर सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित पवित्रजी शास्त्री आगरा ने नैगमादि सप्त नय एवं पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री खनियांधाना ने देव-शास्त्र-गुरू विषय पर विशेष कक्षायें लीं। समस्त कार्यक्रम पण्डित सोनूजी शास्त्री (प्राचार्य) के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

राजस्थान में ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर में सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन किया जा रहा है।

राजस्थान में भ्रमण करते हुए ढाईद्वीप रथ ने पिडावा, झालावाड़, झालरापाटन, मंड़ला, कोटा, बिजोलिया, सिंगोली, बेंगू, नीमच, भीलवाड़ा, विजयनगर, पीसांगन, अजमेर, भिण्डर, लूणदा, बाँसवाड़ा, उदयपुर आदि स्थानों के साधर्मियों को पंचकल्याणक के साक्षी बनने के लिए आमंत्रित किया।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल पुरस्कार 2022

बड़े दादा के नाम से विख्यात जैनदर्शन के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं जैन पथप्रदर्शक के संस्थापक सम्पादक अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के 90वें जन्म दिवस के अवसर पर जयपुर में स्थित पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में उदीयमान पांच व्यक्तित्वों को विभिन्न संस्थाओं द्वारा **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल पुरस्कार 2022** से सम्मानित किया गया एवं पण्डित रतनचन्द भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पुरस्कार स्वरूप नगद राशियाँ भी प्रदान की गईं। ये पुरस्कार ट्रस्ट के महामंत्री डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मंत्री डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं विशिष्ट विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक महानुभावों के करकमलों से प्रदान किये गये।

भावांजलि अध्यात्मरत्नाकर
– गोपालजी प्रभाकर

सरल तरल थे
वो सहजता के पर्याय
जैसे कोई विद्वत्ता के संकाय
अध्यात्मरत्नाकर
नाम था उनका रतनचन्द।
चन्द अल्फ़ाज़ में उत्कीर्ण
नहीं की जा सकती
वो मूरत।
विद्या व्यसन था उनका
पढ़ना–पढ़ाना
उनका धन था,
उपलब्ध आत्मज्ञान
वो रत्नों की खान।
जानो, देखो और मौज़ करो
उनका दिया जीवन सूत्र
सचमुच है विशिष्ट दान
जिज्ञासु जन के लिए।
वो जीवित हैं आज भी
दिलोदिमाग में,
चर्चा परिचर्चा में,
भले ही न दिखे देहाकृति
पर मौजूद हैं सूक्ष्म रूपेण
उनकी कृति में
विचार में
वृत्ति में
अमर्त्य हैं।

1) श्री राकेशजी गोदिका को जैन संस्कृति एवं समाज के प्रति पत्रकारिता के माध्यम से वैचारिक योगदान एवं शाबाश इंडिया पत्रिका के सम्पादन हेतु अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही पुरस्कार स्वरूप 5,100 रूपये की राशि भेंट की गई।

2) श्रीमती सुनीताजी जैन को जैन ज्योतिष एवं समाज के प्रति शिक्षा व साहित्य के माध्यम से वैचारिक योगदान देने एवं अनेक पुस्तकों के लेखन हेतु अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही पुरस्कार स्वरूप 5,100 रूपये की राशि भेंट की गई।

3) पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, जयपुर को वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने तथा अनेक विधानों व कक्षाओं के संचालन हेतु सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही पुरस्कार स्वरूप 11,000 रूपये की राशि भेंट की गई।

4) पण्डित समर्थजी शास्त्री, हरदा को महाविद्यालय में अध्ययन काल के दौरान पाठ्य व पाठ्येतर गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेने हेतु श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही पुरस्कार स्वरूप 5,100 रूपये की राशि भेंट की गई।

5) पण्डित अरविन्दजी शास्त्री, खड़ैरी को महाविद्यालय में अध्ययन काल के दौरान पूर्ण अनुशासन में रहते हुए व्यवस्थित अध्ययन करने हेतु श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही पुरस्कार स्वरूप 5,100 रूपये की राशि भेंट की गई।

सम्मानित व्यक्तियों का चुनाव डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. अखिलजी बंसल, पण्डित संजयजी शास्त्री, पण्डित पीयूषजी शास्त्री व पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया। जैनपथ प्रदर्शक परिवार आपके सम्मान की अनुमोदना करते हुए आपके उन्नति पूर्ण भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता है।

महाविद्यालय स्थल

सा विद्या या विमुक्तये

सच्चा रिश्ता

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में रिश्तों का बहुत महत्त्व होता है। रिश्ते ही किसी के जीवन को सुखमय बना देते हैं और रिश्ते यदि ठीक न हों तो जीवन को नरक भी बना देते हैं, इसलिए रिश्तों की पहचान और उनके साथ यथायोग्य व्यवहार व्यक्ति के जीवन को सुखमय बनाने के लिए आवश्यक हो जाता है।

क्या हम अपने आस–पास दिखने वाले व्यक्ति एवं वस्तुओं से अपने रिश्ते को पहचानते हैं? या उन रिश्तेदारों से रिश्तेदारी निभाना जानते हैं? रिश्तों की बात आते ही हमें माता–पिता, पुत्र–पुत्री, मित्र–शत्रु आदि अनेकों तरह के रिश्ते याद आते हैं; परन्तु ये रिश्ते हमारे मोह द्वारा निर्मित एवं काल्पनिक हैं, जिनसे हम काल्पनिकता में ही बहुत सारी उम्मीदें कर बैठते हैं तब ये रिश्ते दुख का कारण बनते जाते हैं। वास्तव में जगत की प्रत्येक वस्तु व व्यक्ति के साथ हमारा स्वाभाविक रिश्ता ज्ञान–ज्ञेय का है। ज्ञान को अपना कार्य करने के लिए कभी–भी ज्ञेय से अपेक्षा नहीं होती। अत: एकमात्र यही रिश्ता स्वाभाविक और निरपेक्ष होने से सुख का कारण है।

लोक में भी रिश्तेदारों की अपने घर के कार्यों में दख़लंदाज़ी ठीक नहीं मानी जाती, यदि रिश्तेदार यथायोग्य सीमा तक ही हस्तक्षेप करें तो रिश्तेदारी सही बनी रहती है। उसीप्रकार हमारे सभी ज्ञेय रिश्तेदार भी ऐसे ही हैं, वे ज्ञान में कुछ भी दख़लंदाज़ी नहीं करते, वे एक सीमा तक ही अपना कार्य करते हैं, वे ज्ञान में आते तो हैं; परन्तु उनमें हस्तक्षेप की सामर्थ्य नहीं है। यही उनका अद्भुत स्वाभाविक सौंदर्य है। पर जब यह ज्ञानधारी रागी हो जाता है तो ज्ञेयों में हस्तक्षेप करने की कोशिश करता है और राग का कर्ता भी ज्ञेयों को ही ठहराता है, यदि यह ज्ञानधारी इस स्वाभाविक रिश्ते को समझले तो इसके दुख का मूल कारण ज्ञेयों के प्रति एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व रूप वैभाविक बुद्धि मिट जाए।

इस रिश्ते की एक ख़सियत है कि जैसी रिश्तेदारी हमारी मित्र के साथ है वैसी ही शत्रु के साथ, जैसी धन संपत्ति के साथ है वैसी ही मल–मूत्र के साथ, जैसी दूरवर्ती के साथ है वैसी ही निकटवर्ती के साथ, सबसे समान; परन्तु इस स्वाभाविक रिश्तेदारी को जाने बिना अज्ञानी ज्ञेयों में भेदभाव करता है और स्वयं ही दुखी होता है। यदि इसे समझ ले तो दुख के कारण राग–द्वेष रूप वैभाविकभाव स्वयमेव समाप्त हो जायेंगे और आनन्दप्रदायी साम्यभाव प्रकट होगा।

यदि कोई नशे में पत्नी से माँ और माँ से पत्नी कहे तो दुख ही पायेगा। वैसे ही अज्ञानी मोह के नशे में जो ज्ञान–ज्ञेय मात्र के रिश्ते थे, उनसे राग की नाजायज़ रिश्तेदारी निभाये तो दुख ही भोगेगा।

जब रिश्तेदारों से कहा जाता है कि आपका ही घर है, वहाँ यदि वे इस व्यावहारिक कथन को सत्य मान बैठें तो दिक्कत हो जाएगी, ऐसे ही जब व्यवहार में कहा जाता है कि 'ज्ञेयों से ही ज्ञान हुआ' तो उसकी असलियत न समझें तो आनन्द में बाधा होगी। वास्तव में तो ज्ञान और ज्ञेयों का स्वतंत्र परिणमन होते हुए उसमें निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध है। यही इस रिश्ते का सच्चा स्वरूप है।

ज्ञेय अपने प्रमेयत्व स्वभाव से ज्ञान को जानने के विकल्पों से एकदम निर्भार कर देते है और ज्ञान भी एकदम निरपेक्ष होकर सहज जानने का कार्य करता रहता है; यही ज्ञानानुभूति, आत्मानुभूति और आनन्दानुभूति है। बस यही है सच्चा रिश्ता, सच्ची रिश्तेदारी और रिश्ते की सच्ची समझ। **– सन्देश जैन दिल्ली (शास्त्री तृतीय वर्ष)**

दादा अब भी तुमरा सिक्का, जैन जगत में चलता है

– कपिल जैन, बम्हौरी (शास्त्री द्वितीय वर्ष)

है भरा पड़ा इक करण्ड रत्न का, पर रत्न सिर्फ एक चमकता है।
है लिखे गये साहित्य कई, पर इक यही साहित्य उर में उतरता है।
है सरल, सुबोध भाषा सुगम्य, मानो पढ़ते चल–चित्र ही चलता है।
पढ़कर जिसको अज्ञानी भी, जीवन का सार समझता हैं।
है जिसमें कुछ भी अभद्र नहीं, बस उपदेश ही जिसमें झलकता है।
दादा अब भी तुमरा सिक्का, जैन जगत में चलता है...

तुमने जो दिये संस्कार हमको, मानो प्रगति का दीप जलाया है।
लिखा है जो साहित्य सभी में, सुखी जीवन का सार समाया है।
पढ़कर जिसको अभिमानी का, अभिमान भी अब शरमाया है।
लगाकर इक पत्थर नींव का, मुक्ति का द्वार बनाया है।
चलकर उस मुक्ति द्वार से प्राणी, मुक्ति वधु को वरता है।
दादा अब भी तुमरा सिक्का, जैन जगत में चलता है...

थे स्नेह जो छोटों के तरुणों के खुद उत्साह थे जो।
जूझे थे सब हालातों से बस सहज हमें खुद राह थे जो।
था कण–कण जिनका सहज, प्रकृति का इक वरदान थे जो।
सहज कहें या सरल कहें, जिन धर्म की इक पहचान थे वो।
दादा अब भी तुमरा सिक्का, जैन जगत में चलता है...

• महाकाव्य : भरत का अन्तर्द्वन्द्व •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

गतांक से आगे...

द्वितीय अध्याय

(वीर)

प्रेमभाव वात्सल्यभाव से रहें निरन्तर जीवनभर।
एक–दूसरे का आदर सन्मान करें हम जीवनभर।।
अरे एकता में अद्भुत शक्ति होती है इस जग में।
और सभी आजादी से रह सकते हैं सब हिल–मिलके।।

नहीं किसी पर किसी तरह का बन्धन, पूरी आजादी।
और सभी जन रहते हैं जीवनभर सुख–दुख के साथी।।
अगर बाँटते ऋषभदेव तो सौ खण्डों में बँट जाता।
श्री ऋषभदेव के भारत के फिर सौ–सौ टुकड़े हो जाते।।

कोई राजा स्वयं राज्य के टुकड़े कैसे कर सकता?
इसीलिये तो बड़े भाई को राजतिलक होता आया।।
और सभी उसके सहयोगी रहते आये हैं अबतक।
परम्परा तो इसीतरह की रहती आई है अबतक।।

बस यही किया ऋषभेश्वर ने जो अबतक होता आया है।
मिलजुलकर एक साथ रहकर हम सबने उसे चलाया है।।
पृथ्वी बँटती है नहीं कभी अर काम–धाम का बँटवारा।
होता आया है अभी तलक यह काम व्यवस्था का सारा।।

जैसे माँ–बाप नहीं बँटते वैसे ही राज्य नहीं बँटता।
संगठन नहीं विघटन होता यदी राज्य बाँटा जाता।।
हम सभी संगठित रहकर ही आगे–आगे बढ़ सकते हैं।
विघटित होकर तो एक कदम भी आगे ना बढ़ सकते हैं।।

है आज हमारा भाग जगा हम चक्रवर्ति होने वाले।
अर पुण्योदय से अरे हमारे महाभाग जगने वाले।।
हम सब ही हैं अति ही प्रसन्न गौरव गरिमा से मण्डित हैं।
आनन्द मगन ही हैं हम सब हम जिनशासन के पण्डित है।।

आज वृषभ का भारत यह जो भरतक्षेत्र कहलाता है।
यह है अखण्ड परचण्ड चण्ड सारे जग का उजियारा है।।
यह नहीं बँटेगा खण्डों में यह तो सौभाग्य हमारा है।
यह भारत तो हम सबका है यह भारत हमको प्यारा है।।

हम सभी एक हैं एक रहें यह भरतभूमि हम सबकी है।
हम सब ही इसके पालक हैं यह भूमि अरे हम सबकी है।।
यह चक्ररत्न हम सबका है और सभी हम इसके हैं।
बँटवारे की मत बात करो सब एक एक बस एक ही हैं।।

हम सभी ऋषभ के पुत्र और वे जनक अरे हम सबके हैं।
हम उनके हैं हम उनके हैं वे ही सर्वस्व हमारे हैं।।
वे परम पूज्य हैं जनक और हम उनके राज दुलारे हैं।
हम उनके हैं हम उनके हैं ऋषभेश्वर जनक हमारे हैं।।

रे ऋषभ हमारे पिता और हम सब सन्तानें हैं उनकी।
उनकी जो गौरव गरिमा है वह ही है मानों हम सबकी।।
मेरे भाई सब मेरे हैं सब मेरे लिये महत्तम हैं।
सम्पन्न विविध विद्याओं से सचमुच वे सब सर्वोत्तम हैं।।

अत्यन्त उल्लसित भावों से अपने अन्तर को प्रगट किया।
इसतरह सभी से नेह जताकर यथायोग्य सन्मान दिया।।
सब परिजन को सब पुरजन को अत्यन्त नेह से विदा किया।
'चक्ररत्न के स्वागत में सब आवें' – यह अनुरोध किया।।

(दोहा)

इसप्रकार पूरण हुआ, पुत्र जन्म का पर्व।
अब कल होगा जान लो, चक्ररत्न का पर्व।।
विजय यात्रा भरत की, अब होगी आरम्भ।
मंगलमय मंगल रहे, उनका विजयारम्भ।।

द्वितीय अध्याय समाप्त

–●–

प्रश्नोत्तरमाला

23

समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न : आत्मा और शरीर के एकपने के कथन किस नय से कहे जाते हैं और क्यों?

उत्तर : आत्मा और शरीर की एक क्षेत्र में एक साथ रहने की अवस्था होने से उक्त कथन व्यवहार नय से कहे जाते हैं।

प्रश्न : किस नय से आत्मा और शरीर में एकपना नहीं है और क्यों?

उत्तर : निश्चयनय से दोनों में एकपना नहीं है; क्योंकि उपयोग स्वभावी आत्मा और अनुपयोग स्वभावी शरीर में अत्यन्त भिन्नता है।

प्रश्न : केवली की व्यवहार और निश्चय स्तुति में अन्तर बताइये।

उत्तर : शरीर के गुणों के आधार पर तीर्थंकर केवली की स्तुति करना व्यवहार स्तुति है और केवली के गुणों के आधार पर उनकी स्तुति करना निश्चय स्तुति है।

प्रश्न : भगवान के देहदर्शन को देवदर्शन किस नय से कहा है?

उत्तर : व्यवहारनय से भगवान के देहदर्शन को देवदर्शन कहा है।

प्रश्न : शरीर के आधार पर की गई स्तुति को निश्चय स्तुति क्यों नहीं माना जाता? उदाहरण सहित स्पष्ट किजिए।

उत्तर : जिसप्रकार नगर का वर्णन राजा का वर्णन नहीं होता; उसीप्रकार शरीर के गुणों का स्तवन केवली के गुणों का स्तवन नहीं होता। निश्चय से शरीर के गुण आत्मा के गुण नहीं हैं; इसलिए शरीर के आधार पर की गई स्तुति को निश्चय स्तुति नहीं माना जा सकता।

प्रश्न : समयसार में कितने प्रकार की निश्चय स्तुति बताई गई है? नाम बताइए।

उत्तर : समयसार में तीन प्रकार की स्तुति बताई गई है –

1) जितेन्द्रिय जिनरूप 2) जितमोहरूप 3) क्षीणमोहरूप

प्रश्न : जितेन्द्रिय कौन है? या प्रथम प्रकार की निश्चय स्तुति क्या है?

उत्तर : जो इन्द्रियों को जीतकर आत्मा को अन्य द्रव्यों से अधिक (भिन्न) जानते हैं, वे जितेन्द्रिय हैं। इन्द्रियों को जीतना ही प्रथम प्रकार की निश्चय स्तुति है।

प्रश्न : अमृतचन्द्राचार्य ने इन्द्रियों में क्या–क्या शामिल किया है?

उत्तर : इस गाथा में आचार्य अमृतचन्द्र ने इन्द्रियों में द्रव्य–इन्द्रियाँ, भाव–इन्द्रियाँ और इन्द्रियों के विषयभूत पदार्थों को शामिल किया हैं।

श्री 1008 महावीरस्वामी दि. जिनमदिर धर्मायतन परिसर में..

भव्य शिलान्यास समारोह

दिनांक – 17–18 दिसम्बर 2022

निर्देशन
पण्डित रजनीभाई दोशी
हिम्मतनगर

विद्वत सान्निध्य
पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर
पण्डित अभयकुमारजी देवलाली
डॉ. विवेकजी शास्त्री छिंदवाड़ा

आयोजक
श्री आचार्य कुन्दकुन्द वीतराग विज्ञान मण्डल जबलपुर
जैन युवा फेडरेशन जबलपुर

वैराग्य समाचार

1) मौ निवासी **श्री महेन्द्रकुमारजी जैन सिंघई** का 15 नवम्बर 2022 को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी साधर्मी वात्सल्य रखने वाले सच्चे आत्मार्थी थे । ज्ञातव्य है कि आप पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ग्वालियर के पिताश्री थे। आपकी स्मृति में 1100 रूपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

2) छिन्दवाड़ा निवासी **बाल ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी धवल** का 20 नवम्बर 2022 को देह–परिवर्तन हो गया। आप जैन समाज के एक उच्च कोटि के मूर्धन्य विद्वान थे। गुरूदेवश्री से प्राप्त तत्त्वज्ञान को आत्मसात करते हुए जन–जन तक पहुँचाने का कार्य जीवनपर्यंत करते रहे।

दिवंगत आत्माएँ अभ्युदय को प्राप्त हों – यही भावना है।

श्रद्धासुमन समर्पित

नागपुर : यहाँ 24 नवम्बर 2022 को श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा **बाल ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी धवल** के वैराग्यमय प्रसंग पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

श्रद्धांजलि सभा के अध्यक्षता श्री जयकुमारजी देवड़िया ने की। श्री अशोककुमारजी जैन, डॉ. राकेशजी शास्त्री, पण्डित अरूणजी मोदी सागर, पण्डित अंकितजी शास्त्री आरोन, पण्डित विपिनजी शास्त्री, विदुषी प्रतीतिजी मोदी एवं नागपुर के अनेक स्थानीय विद्वानों ने धवलजी द्वारा किए गये अलौकिक कार्यों का स्मरण करते हुए उनके प्रति अपने श्रद्धासुमन समर्पित किए। सभा का संचालन पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री ने किया।

विश्व की अद्वितीय रचना ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर में आयोजित सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याण पर भजन...

पंचकल्याण महोत्सव आया

पंचकल्याण महोत्सव आया, ऋषभ बनेंगे अब भगवान
हे साधर्मी जन तुम आओ, करते हैं मंगल आह्वान
ढाईद्वीप प्रमाण विराजे, सिद्धालय में सिद्ध भगवान
ये है प्रथम विश्व की रचना, करती है आकर्षित ध्यान

गुरू प्रभावना योग ये, मानो चौथा काल,
भारत भूमि पर अहो! संकुल बने विशाल।।
मंगलमय **मंगलायतन**, **शाश्वतधाम** महान,
आत्मार्थी जन पा रहे, **पारमार्थिक ध्रुवधाम**।।

अब है **ढाईद्वीप** की बारी...अब है ढाईद्वीप की बारी...
ये इन्दौर नगर की शान...ये इन्दौर नगर की शान...
पंचकल्याण महोत्सव आया।। 1 ।।

ढाईद्वीप परिकल्पना इक साधर्मी का विचार,
टोडरमल स्मारक ने स्वप्न किया साकार।।
गुरू कहान का **हुकुम** ये जन जन को स्वीकार,
अंतिम क्षण तक तत्त्व का करते रहो प्रचार।।

ऐसी रचना के निमित्त से...ऐसी रचना के निमित्त से...
होगा जीवों का कल्याण...होगा जीवों का कल्याण...
पंचकल्याण महोत्सव आया।। 2 ।।

कण-कण ढाईद्वीप से, आयेगी आवाज,
क्रमनियमित सिद्धान्त का होगा फिर आगाज।।
हो प्रभावना मार्ग की, निज में हो विश्राम,
ऐसी हो आराधना, पायें **चेतन-धाम**।।

साधर्मी जन का ये मेला **चेतन-बाग** में होवे खेला
आयेंगे अनेक विद्वान....आयेंगे अनेक विद्वान....
पंचकल्याण महोत्सव आया।। 3 ।।

- पण्डित संजीवजी शास्त्री, उस्मानपुर

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

गिरनारजी (गुज.) : यहाँ 15 से 21 नवम्बर 2022 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान, गुरूदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त प्रतिदिन सात प्रवचनों का लाभ मिला। विशिष्ट विद्वानों में पण्डित शैलेषभाई शाह, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, डॉ. मनीषजी मेरठ के जिनागम के विविध विषयों पर प्रवचन हुए।

शिविर में श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री प्रदीपजी चौधरी, श्री अशोकजी भोपाल, श्री आई. एस. जैन, श्री उल्लासभाई जोबालिया आदि का समागम प्राप्त हुआ। विधान पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा व पण्डित अशोकजी उज्जैन के सहयोग से एवं अन्य कार्यक्रम पण्डित रजनीभाई दोषी व पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के सहयोग से हुए। शिविर के आयोजन में श्री कमलेशभाई भरतभाई टिम्बड़िया का विशेष सहयोग रहा। शिविर का निर्देशन श्री बसन्तभाई दोषी एवं श्री महिपालजी 'ज्ञायक' ने किया।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित...

जैन तिथिदर्पण - 2023

जैन तिथिदर्पण 2023 प्रकाशित हो चुका है। यह तिथिदर्पण अष्टमी व चतुर्दशी पर व्रत-उपवास तथा अनेक प्रकार के नियमों का पालन करने वाले साधर्मियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें : **अखिल शास्त्री - 7412078704**

भूल सुधार

प्रशिक्षण शिविर - 21 मई से 07 जून 2023 तक

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन**द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2022

प्रति,